17/12/25
Eve

This question paper contains 3 printed pages]

Roll No. | | | | | | | | | | |

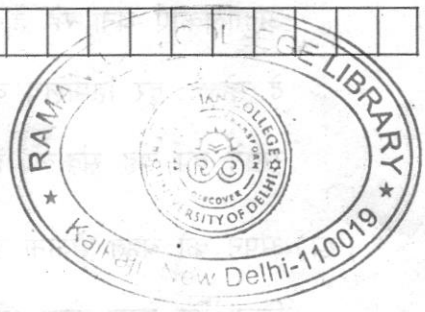

RAMANUJAN COLLEGE LIBRARY
Kalkaji, New Delhi-110019

S. No. of Question Paper : **1340**

Unique Paper Code : **62051312**

Name of the Paper : **Hindi-A**

Name of the Course : **B.A. (Programme) Hindi : NEP**

Semester : **III**

Duration : **3 Hours** Maximum Marks : **75**

(इस प्रश्न-पत्र के मिलते ही ऊपर दिए गए निर्धारित स्थान पर अपना अनुक्रमांक लिखिए।)

सभी प्रश्न अनिवार्य हैं।

1. सप्रसंग व्याख्या कीजिए : 2×7.5=15

(क) कर्म के मार्ग पर आनंदपूर्वक चलता हुआ उत्साही मनुष्य यदि अंतिम फल तक न भी पहुँचे, तो भी उसकी दशा कर्म न करने वाले की अपेक्षा अधिकतर अवस्थाओं में अच्छी रहेगी; क्योंकि एक तो कर्म-काल में उसका जितना जीवन बीता, वह संतोष या आनंद में बीता, उसके उपरांत फल की अप्राप्ति पर भी उसे यह पछतावा न रहा कि मैंने प्रयत्न नहीं किया। फल पहले से कोई बना-बनाया पदार्थ नहीं होता। अनुकूल प्रयत्न-क्रम के अनुसार उसके एक-एक अंग की योजना होती है।

अथवा

हमारे संस्कार वही हैं, हम अब भी जल को तीर्थ मानते हैं, जल हमें तारता है और उस तीर्थ को हम इस तरह बर्बाद कर रहे हैं। हमीं थे, जिन्होंने विजन में, प्रकृति के एकांत में, ऊँचे पर्वतों में, दुर्गम घाटियों में निविड़ वनों के बीच उद्दाम रूप से दहाड़ने वाले झरनों में तीर्थ की कल्पना की, टेकड़ियों पर देवी के, शिव के स्थान बनाए, उनकी यात्रा के श्रम को हमने जीवन का धर्म माना, हमने नदियों के बलुहे तट को यज्ञस्थली बनाया और हमीं हैं जो अपने तीर्थों में ऊँची

अट्टालिकाएँ बना रहे हैं, कचरा कूड़ा से तीर्थ पाट रहे हैं, किसी विजन को विजन नहीं रहने दे रहे हैं, दूर हिमालय की उपत्यका में ध्वनि विस्तारक यन्त्र का शोर गुंजा रहे हैं, कैसा पानी रखने का यह संकल्प है ? कैसी आत्मघातिनि यह प्यास है ?

(ख) अपने को बहुत रोकना चाहती थी फिर भी वह घोर पाप मैं सहन न कर सकी और तय कर लिया कि आज जैसा भी होगा मैं फैसला कर ही डालूँगी। मैं गुस्से से काँपते हुए उनके पास पहुँची। इस समय उससे बात करने में भी मुझे घृणा हो रही थी, क्रोध से मेरा रोम-रोम जल रहा था ! फिर भी अपने को काबू में रखकर और स्वर, को भरसक कोमल बनाकर मैंने उससे कहा, "एक बार अंतिम चेतावनी देने के ख्याल से ही मैं इस समय तुम्हारे पास आई हूँ। तुम्हारा यह सर्वनाश देखकर जानते हो मुझे कितना दुख होता है ? अब भी समय है संभल जाओ। सुबह का भूला यदि शाम को घर आ जाए तो भूला नहीं कहलाता !"

अथवा

रात को सोते समय आकाश साफ़ होता था। दिसंबर के निविड़, गहन अंधकार में दूर की पहाड़ियाँ ड्राइंग-पेपर पर धूमिल रेखा-चित्र से स्तब्ध, निश्चल दिखती थीं—इतनी महीन इतनी म्लान कि लगता था जैसे अँधेरे पर हाथ फेरते ही सब कुछ मिट जाएगा। आकाश कुछ नीचे सरक आता था, धरती को छूता-सा और धरती अपना ओर-छोर समेटकर घुटनों पर झुक आती थी, जैसे पहाड़ियों के आगे गुमसुम प्रार्थना कर रही हो। हम बच्चे थे, इस तरह के अजीब अद्‌भुत चित्रों को आँखों में बसाकर लिहाफ़ में ठिठुरते हुए सो जाते थे।

2. संस्मरण साहित्य का संक्षिप्त परिचय दीजिए। 12

अथवा

नाटक के प्रमुख तत्वों की विवेचना कीजिए।

3. 'मलबे का मालिक' कहानी में विभाजन से उपजी त्रासदी का वर्णन कीजिए। 12

अथवा

'जुलूस' कहानी में वर्णित देशप्रेम की भावना पर प्रकाश डालिए।

4. 'रहिमन पानी राखिये' निबंध में पर्यावरणीय चेतना पर प्रकाश डालिए। 12

अथवा

'मैं हार गई' कहानी की समीक्षा लिखिए।

5. 'अंधेर नगरी' नाटक में सत्ता की कुव्यवस्था पर अपने विचार प्रस्तुत कीजिए। 12

अथवा

'भोलाराम का जीव' व्यंग्य में व्याप्त भ्रष्टाचार पर प्रकाश डालिए।

6. किसी **एक** पर टिप्पणी लिखिए : 12

(क) ललित निबन्ध की परंपरा

(ख) भारतेन्दुयुगीन नाटक में स्वाधीनता का स्वर।